

PRATHAM BOOKS

पठन स्तर ४

प्रिन्सेस स्ट्रीट की आर्ट गैलरी

Author: Jerry Pinto
Illustrator: Kripa B
Painters: Gieve Patel, Sudhir Patwardhan
Translator: Sandhya Gandhi-Vakil



बंबई यनी आधुनिक मुंबई के मलाबार हिल इलाके की चढ़ान पर *ऐवान-ए-रफ़ियत,* यानी संवेदना घर, नाम की एक ख़ूबसूरत हवेली थी।

यह हवेली थी बाप्सी सबावाला की। बाप्सी दौलतमंद घराने की थीं और कुछ अलग ही ढाँचे में ढली थीं।

वैसे तो वे समाज-सेवा में रत रहती थीं, पर जब उन्होंने किसी को यह कहते सुना कि स्त्रियों को पुरुषों के साथ नाटकों में काम करना शोभा नहीं देता तो वे अभिनेत्री बन गईं।

बाप्सी दौलतमंद सर कावसजी जहाँगीर और धनबाई की सबसे छोटी बेटी थीं।

अगर आप एल्फ़िन्स्टन कॉलेज का अग्रभाग देखेंगे तो वहाँ सर कावसजी जहाँगीर का चेहरा तराशा हुआ पायेंगे। ऐसे जाने-माने खानदान की इस बेटी ने जब रंगमंच पर पाँव रखा तो वह समाज के दकियानूसी ख़यालों को ललकार रही थीं।



बाप्सी अपनी हवेली को पत्थर से रचा संगीत कहती थीं। देश भर से कारीगर बुलवाकर उन्होंने अपने घर को सजाया-सँवारा था।

जहाँ यह हवेली हुआ करती थी वहाँ आज महाराष्ट्र सरकार का सह्याद्री अतिथि गृह स्थित है।

बाप्सी को जानवरों से बड़ा लगाव था।
उनकी पसंदीदा अँगूठी मेंढक के आकार की थी।

एक बार तो बाप्सी ने अपने जानवर मित्रों के लिये सबसे शानदार ताजमहल होटल में बड़ी दावत दी। सड़कों पर घूमते कुत्तों-बिल्लियों को खाना खिलाया गया। अपने घोड़े पर सवार बाप्सी होटल की आलीशान सीढ़ियाँ चढ़कर दावत पर पहुँचीं। घोड़े साहब को उनके तोबड़े में खाना परोसा गया।





बाप्सी के दो बेटे थे, शाहरुख और जहाँगीर। जहाँगीर चित्रकार थे। उन्होंने पेरिस और इंग्लैण्ड में चित्रकला की तालीम ली थी। वहाँ उनकी शिरीन दस्तूर से मुलाकात हुई। वहीं शादी करके दोनों वापिस लौटे थे।

एक रात किसी अजीब आवाज़ से शिरीन की नींद टूटी। बत्ती जलाई तो कमरे में एक सुअर को पाया।



शिरीन ने अपने पति को जगाते हुए कहा, “जहाँगीर, हमारे कमरे में एक सुअर घुस आया है।” जहाँगीर बुदबुदाया, “उफ़्फ़, माँ का पालतु सुअर होगा।”
बाप्सी सचमुच ज़माने से ज़रा हट कर थीं।



बाप्सी बड़ी दरियादिल थीं। उन्होंने जलियाँवाला बाग़ के पीड़ितों के लिये चंदा जमा किया। बेरोज़गार जवानों को काम दिलाने के लिये उन्होंने कुलाबा इलाके में स्वबल स्टोर्स नामक एक बड़ी दुकान खोली।

उन्होंने चंदा जमा करने के लिये एक बार चाय और नाच की महफ़िल का आयोजन किया। मदद करने के लिये खोर्शेद एडनवाला को बुलाया। खोर्शेद हाल ही में स्कूली पढ़ाई ख़त्म कर चुकी थी।





बाप्सी : तुम्हें भी महफ़िल में आना है, हाँ!
खोर्शेद : मुझे नहीं लगता मैं..
बाप्सी : आ भी जाओ, मज़ा आयेगा। तुम्हारा साथ देने के लिये मैंने सही शख़्स भी ढूँढ़ा है-केकू गांधी।
खोर्शेद : क्या उसे पता है कि वह मेरे साथ चलने वाला है?
बाप्सी : जब मैं बताऊँगी तो उसे पता चल जायेगा। आप दोनों मेरे बेटे जहाँगीर के टेबल पर बैठेंगे।

पर उनके बेटे जहाँगीर सबावाला ने जाने का विचार ही बदल दिया और टिकट रद्द कर डाले।

उस दिन एडनवाला परिवार का फ़ोन बजा।

केकू : हलो, क्या मैं खोर्शेद एडनवाला से बात कर सकता हूँ?
खोर्शेद : जी, बोलिये।
केकू : सुनो, कल हम डान्स महफ़िल के लिये जानेवाले थे, पर वह तो अब मुमकिन नहीं। तो चलो एक फ़िल्म देखने चलते हैं, क्या ख़याल है?
खोर्शेद : ठीक है।

कुछ अरसे बाद जब केकू ने शादी के लिये पूछा तब भी खोर्शेद ने कहा, “ठीक है”।



केकू गांधी एक भला इन्सान तो था ही। समय के साथ वह और भी भला बनता गया। उसके पिताजी तंबाकू व्यापारी थे और उन्होंने बान्द्रा इलाके में एक बहुत ही बढ़िया बंगला बनवाया था-पत्थर से रचा और सुरुचिपूर्ण। बंगले का नाम था-*केकी मंज़िल*।

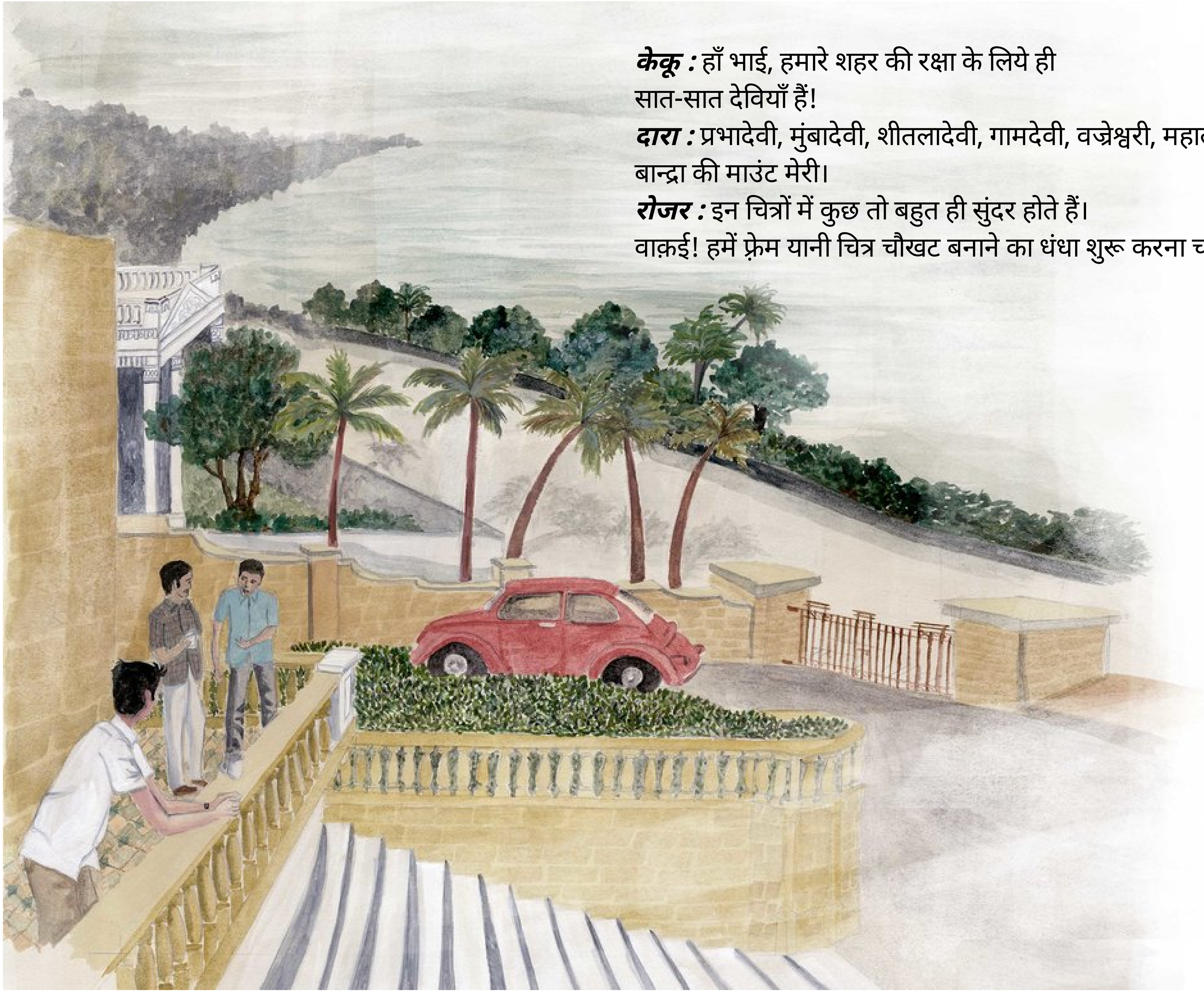
(यह बंगला आज भी मौजूद है। रास्ते के उस पार बने बगीचे में बैठकर आप इत्मिनान से उसे देख सकते हैं। फिर थोड़ा सा मुड़कर शाहरुख ख़ान का बंगला मन्नत भी देख सकते हैं। दोनों को देखकर जी भर जाए तो पीछे मुड़कर समुंदर को देख सकते हैं। अब आपका कभी भी जी नहीं भरेगा।)





एक दिन केकू और उनका चचेरा भाई दारा कहीं जा रहे थे कि उनकी गाड़ी रोजर वॉन डेम नामक शख़्स की गाड़ी से टकरा गई। जब युरोप में दूसरा विश्वयुद्ध छिड़ गया तो ये जनाब बेल्ज़ियम से भारत आ गये थे।

तीनों गपशप करने लगे। बात-बात में वॉन डेम ने कहा कि भारत में सभी घरों में देवी-देवताओं के चित्र टँगे दिखते हैं।



केकू : हाँ भाई, हमारे शहर की रक्षा के लिये ही सात-सात देवियाँ हैं!

दारा : प्रभादेवी, मुंबादेवी, शीतलादेवी, गामदेवी, वज्रेश्वरी, महालक्ष्मी और बान्द्रा की माउंट मेरी।

रोजर : इन चित्रों में कुछ तो बहुत ही सुंदर होते हैं। वाक़ई! हमें फ़्रेम यानी चित्र चौखट बनाने का धंधा शुरू करना चाहिये।



केकू ने इसके बारे में अपने पिता से बात की।
पिताजी ने कहा, “अंधेरी इलाके में हमारी कुछ ज़मीन है। चाहो तो तुम वहाँ कारखाना शुरू कर सकते हो।”
यह जगह थी शापूर बाग़। यहीं उन्होंने केमोल्ड कारखाना शुरू किया और यहाँ बनाये फ़्रेम बेचने के लिये मरीन लाइन्स स्टेशन के पास प्रिन्सेस स्ट्रीट पर एक दुकान खोली।

उस ज़माने में युरोप में भयानक हादसे घट रहे थे। एडोल्फ़ हिटलर यहुदी कौम के लोगों को यातना शिविरों में बंदी बनाकर उनसे गुलामों की तरह काम करवाकर, फिर उन्हें मौत के घाट उतार रहा था। कई यहुदी जर्मनी और अन्य युरोपीय देशों से बच भागे-कुछ स्विज़रलैंड गये तो कुछ अमरीका। कुछ भारत में भी आए।





उन्हीं में से एक थे भूवैज्ञानिक रुडी वोन लेडन। ये १९३३ (1933) में बंबई आए। वे व्यंग्य चित्रकार भी थे। देखते-देखते भारत के नामी कला समालोचकों में उनकी गिनती होने लगी।

इमान्युएल श्लेसिंगर का ऑस्ट्रिया में हैट बनाने का कारखाना था। उन्हें सब कुछ छोड़कर वहाँ से भागना पड़ा था। यहाँ आकर उन्होंने एक रसायन विक्रेता से साझेदारी में धंधा शुरू किया, गोवा की एक महिला से शादी की और फिर से अपनी किस्मत चमकाई।

वॉल्टर लैंघेमर इटली के एक महाविद्यालय में चित्रकला के प्राध्यापक थे। उनकी एक शिष्या थीं शिरीन विमादलाल। उसने वहाँ के बिगड़ते हालात देखकर वॉल्टर और उनके परिवार को हिन्दुस्तान ले आने का इन्तज़ाम किया। यहाँ शिरीन के पिताजी ने वॉल्टर को टाइम्स ऑफ़ इंडिया में नौकरी दिलवाई।

इन सब लोगों की दिलचस्पी थी चित्रकला में। उन्होंने भारतीय चित्रकारों की युवा पीढ़ी को बहुत बढ़ावा दिया और उनकी यूरोप और अमरीकी चित्र शैलियों से पहचान करवाई।



कृष्णा हावलाजी आरा एक अंग्रेज़ परिवार के यहाँ नौकर थे और लोगों की मोटर-गाड़ियाँ धोते थे। उनकी कला को परख कर लैंघेमर ने कृष्णा को चित्रकार बनने का मौका दिया।

केकू और खोर्शेद गांधी के घर के बिल्कुल सामने जंग में पकड़े गये कैदियों का शिविर था। इस शिविर में कई इतालवी सैनिक थे। लॉर्ड माऊन्टबेटन ने सुना कि इनमें से कई चित्रकार हैं। उन्होंने इन कलावंत सैनिकों को लेकर एक अनोखा प्रयोग किया, जिसे मुर आर्ट नाम दिया गया। इस प्रयोग के ज़रिये इन चित्रकारों ने भारत भर में सेना के भोजनकक्षों और सैनिकों के बेरकों को चित्रों से सजाया।
इन सब युरोपीय लोगों से केकू की दोस्ती जम गई। शायद आधुनिक चित्रकला से केकू की पहचान इन्हीं की बदौलत हुई। वैसे भी अगर आप चित्रों के लिये चौखटे बनाने का धंधा करते हैं तो चित्रकारों से दोस्ती होना तो बड़े फ़ायदे की बात थी, है न?

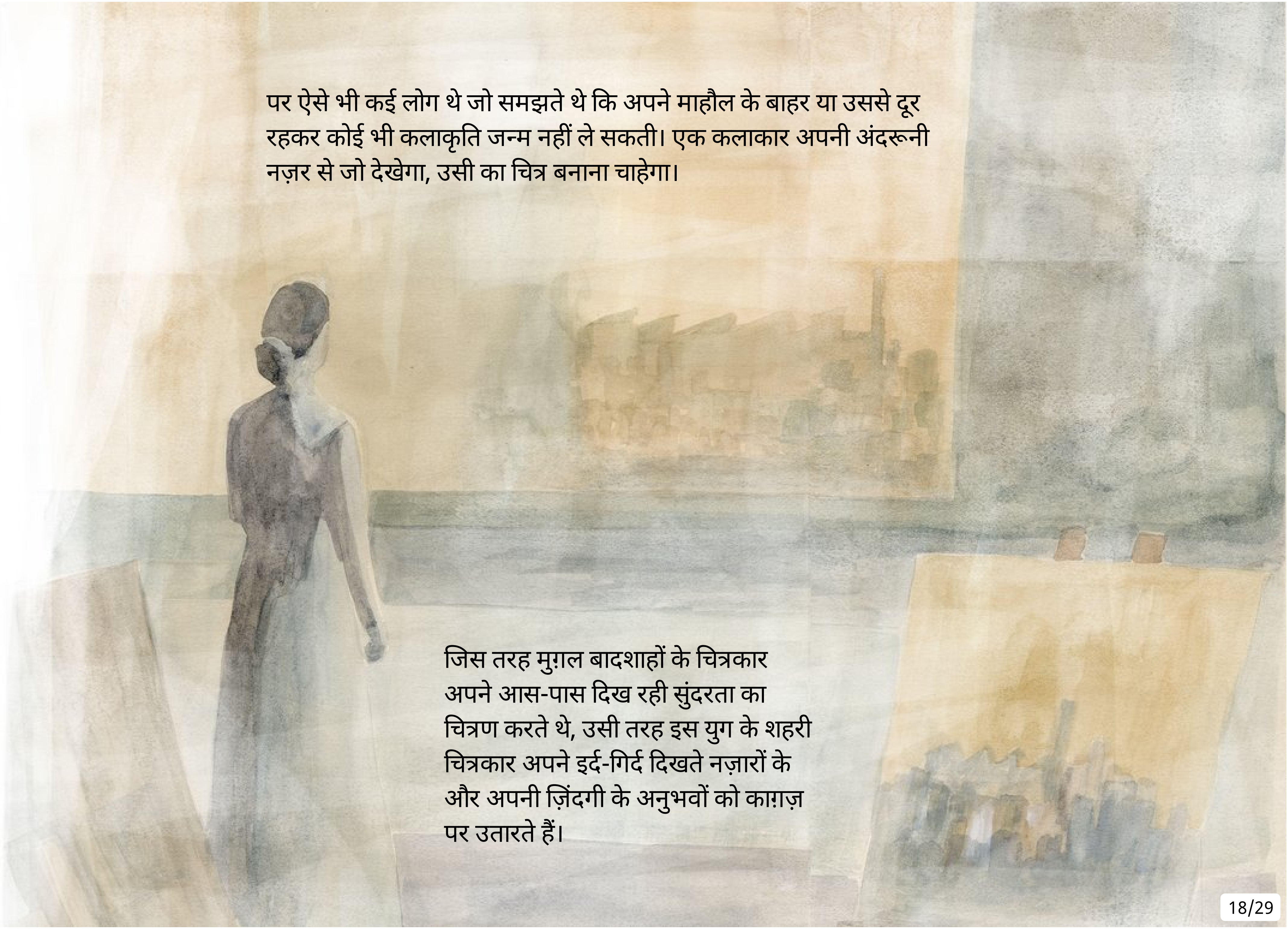




उन दिनों बहुत कम लोग आधुनिक चित्रकला की कृतियाँ खरीदते थे।
उन्हें पसंद थे मुग़ल लघुचित्र, पहाड़ी शैली के चित्र, गुप्त युग, चोल युग की कांस्य मूर्तियाँ आदि।

पर आधुनिक चित्रकला?
“अरे, इससे बेहतर चित्र तो मेरा तीन बरस का बेटा बना सकता है।”
“मतलब क्या है इसका यार?”
“भई, मुझे तो ऐसा चित्र चाहिये जो मेरे नये दिवानपोश के साथ जँचे।”





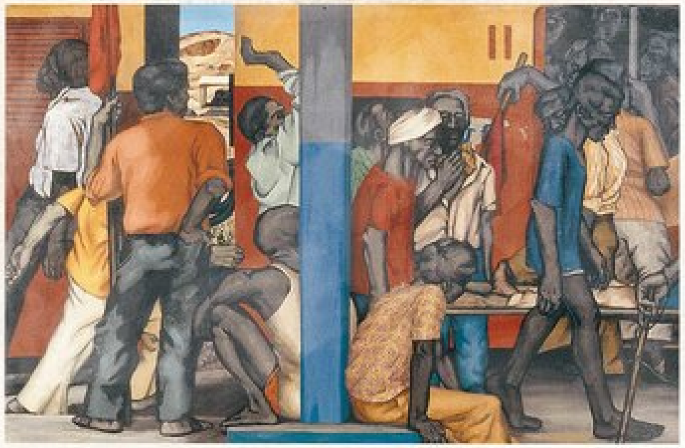
पर ऐसे भी कई लोग थे जो समझते थे कि अपने माहौल के बाहर या उससे दूर रहकर कोई भी कलाकृति जन्म नहीं ले सकती। एक कलाकार अपनी अंदरूनी नज़र से जो देखेगा, उसी का चित्र बनाना चाहेगा।

जिस तरह मुग़ल बादशाहों के चित्रकार अपने आस-पास दिख रही सुंदरता का चित्रण करते थे, उसी तरह इस युग के शहरी चित्रकार अपने इर्द-गिर्द दिखते नज़ारों के और अपनी ज़िंदगी के अनुभवों को काग़ज़ पर उतारते हैं।



गीव पटेल, पिकॉक एट नरीमन पॉइंट, १९९९ (1999)

उन्हें लोग मेहनत करते दिखते हैं।
शायद वे यह देखते हैं कि निसर्ग का क्या हाल होता है जब नरीमन पॉइंट पर एक मोर भटक जाता है।
वे ट्रेन में सफ़र कर रहे लोगों को देखते हैं।



सुधीर पटवर्धन, एक्सीडेंट ऑन मे डे, १९८१ (1981)

पर वे उन पुरानी चीज़ों को भी देखते हैं जो हमारे पास थीं, जैसे कि बनारस या गोवा का एक छोटा गिरजा।
वे लोक कला देखते हैं और कलाजगत के धुरंधर महारथियों को देखते हैं और वे टेक्सियाँ देखते हैं। वे जानवर देखते हैं और बड़ी-बड़ी आँखों वाले ग़मग़ीन बच्चे भी देखते हैं।

आधुनिक चित्रकार सिर्फ़ जो देखता है उसे हू-ब-हू काग़ज़ पर नहीं उतारता। यह काम तो फ़ोटोग्राफ़र का है। चित्रकार चित्र बनाते वक़्त उस पर अपनी छाप छोड़ता है-अपने वजूद का एक कतरा रंगों में मिला देता है। यह बात जितनी कठिन लगती है उतनी है नहीं।
जैसे हम सभी अगर घर का चित्र बनायें तो हर एक का चित्रण अलग होगा।









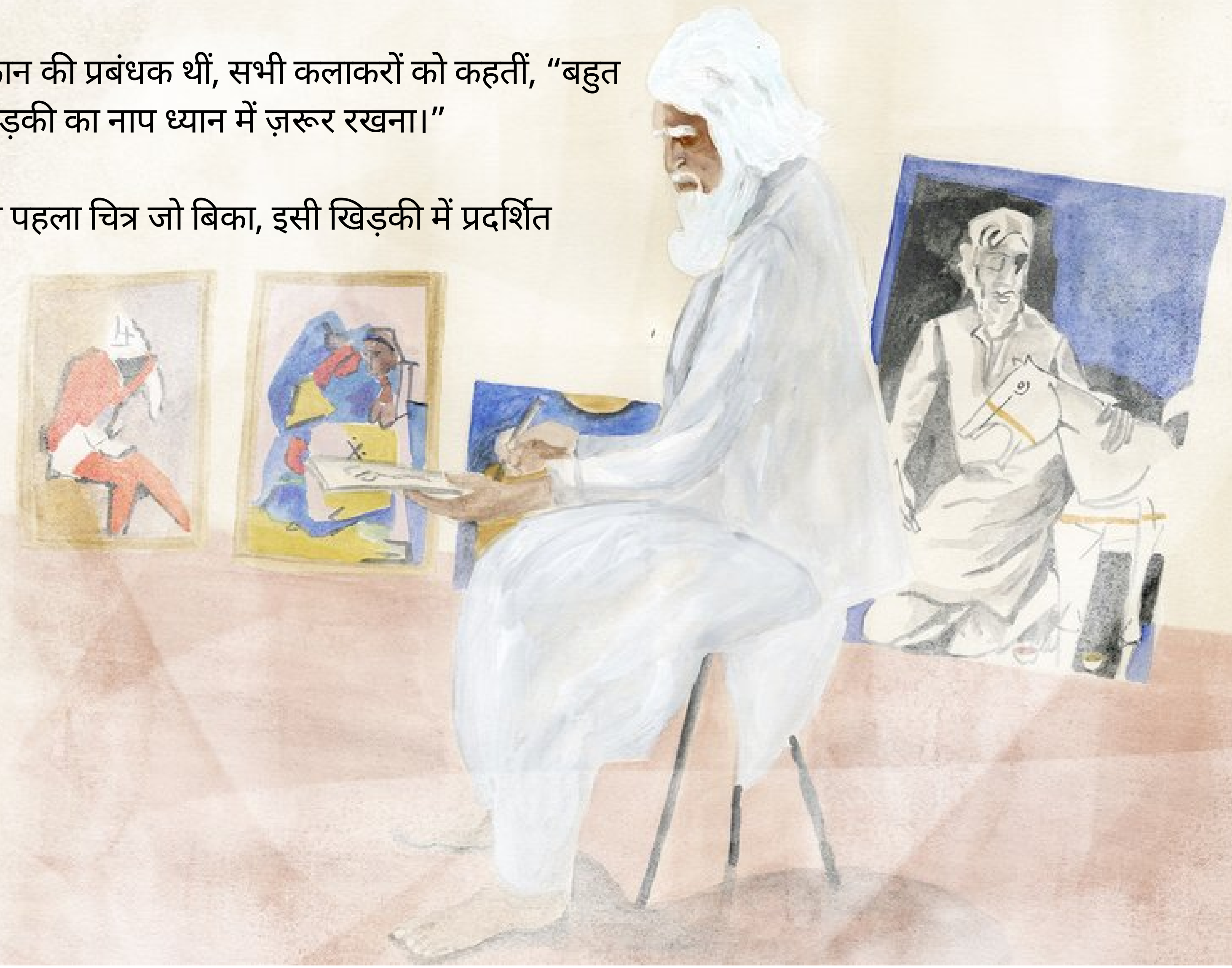
कोई भी चित्र देखने लायक तब बनता है जब चित्र में चित्रकार का भी कुछ अंश घुल जाये। आधुनिक चित्रकला कैसे समझें? चित्र को गौर से देखिये, लंबे समय तक देखते रहिये। धीरे-धीरे चित्रकार क्या बताना चाहता है, इसका अंदाज़ा लगना शुरू हो जाएगा।

शायद केकू ने अच्छे चित्र क्या हैं, इस बात की समझ भी इसी तरह पाई। उन्होंने अपने चौखटों में मढ़े इतने सारे चित्र इतनी बारीकी से देखे थे कि धीरे-धीरे उनकी परख निखरती गई।

चौखटों के लिये आये चित्रों में से केकू कुछ चित्र चुनकर अपनी प्रिन्सेस स्ट्रीट की दुकान की खिड़की में टाँगने लगे। (आज इस सड़क का नाम शामलदास गांधी मार्ग है।)

रोशन कालापेसी, जो दुकान की प्रबंधक थीं, सभी कलाकरों को कहतीं, “बहुत बड़े चित्र मत बनाना। खिड़की का नाप ध्यान में ज़रूर रखना।”

एम.एफ़. हुसैन का सबसे पहला चित्र जो बिका, इसी खिड़की में प्रदर्शित किया गया था।

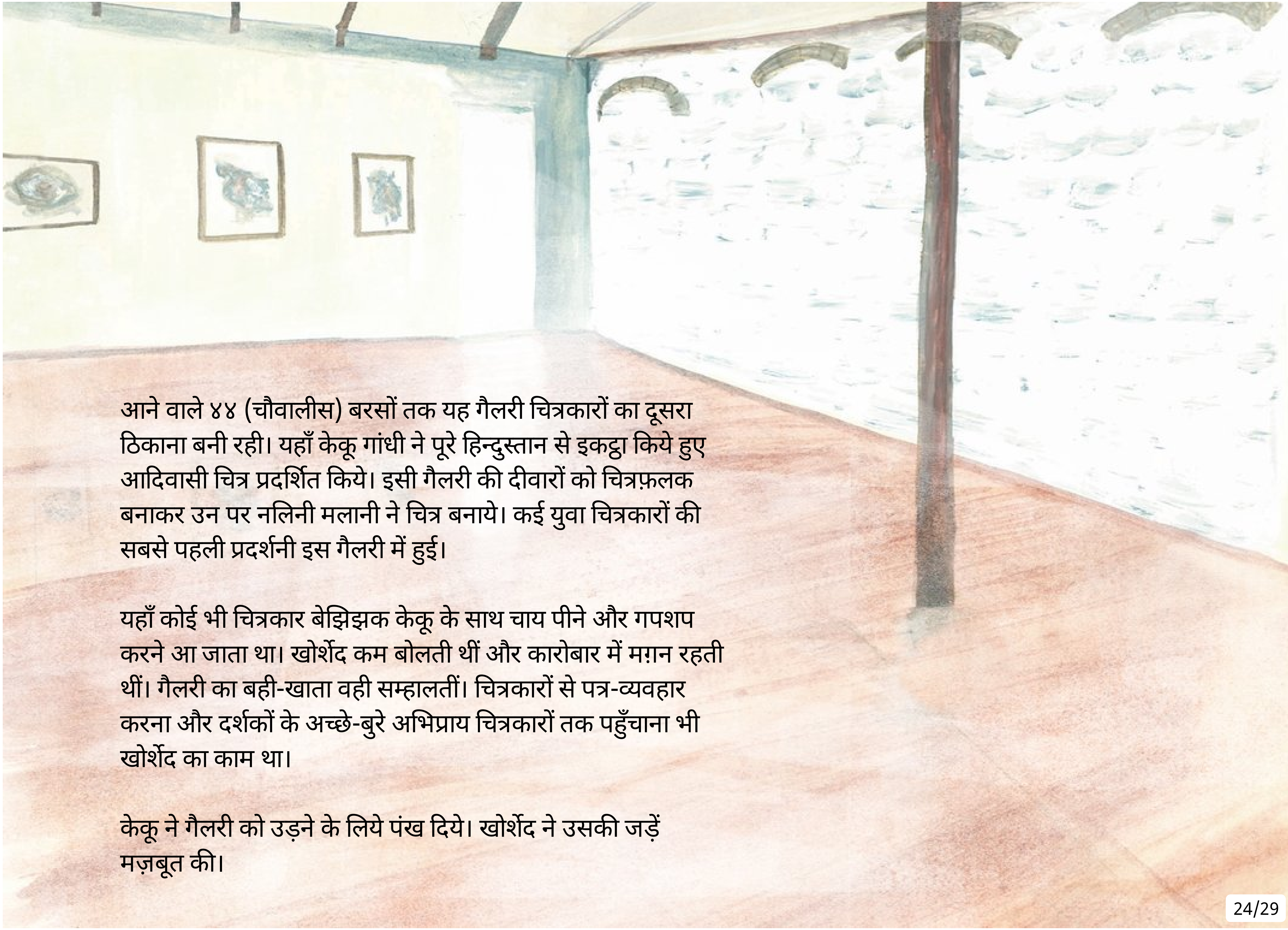




सन् १९५२ (1952) में जहाँगीर आर्ट गैलरी खुली। यह एक सार्वजनिक कला दीर्घा थी जहाँ कोई भी चित्रकार अपने चित्र प्रदर्शित करने को दे सकता था। इसके प्रबंधक थे सोली बाटलीवाला। उन्होंने केकू और खोर्शेद से पूछा कि क्या वे इस इमारत की पहली मंज़िल पर आर्ट गैलरी खोलना चाहेंगे? “पर जगह काफ़ी छोटी है,” उन्होंने चेताया।

वाक़ई जगह छोटी थी पर नौ महीनों में यहाँ बंबई की सबसे पहली कला दीर्घा बनी जो चित्रकारों को आमंत्रित करके उनसे प्रदर्शन और बिक्री के लिये चित्र बनवाने लगी।





आने वाले ४४ (चौवालीस) बरसों तक यह गैलरी चित्रकारों का दूसरा ठिकाना बनी रही। यहाँ केकू गांधी ने पूरे हिन्दुस्तान से इकट्ठा किये हुए आदिवासी चित्र प्रदर्शित किये। इसी गैलरी की दीवारों को चित्रफ़लक बनाकर उन पर नलिनी मलानी ने चित्र बनाये। कई युवा चित्रकारों की सबसे पहली प्रदर्शनी इस गैलरी में हुई।

यहाँ कोई भी चित्रकार बेझिझक केकू के साथ चाय पीने और गपशप करने आ जाता था। खोर्शेद कम बोलती थीं और कारोबार में मग़्न रहती थीं। गैलरी का बही-खाता वही सम्हालतीं। चित्रकारों से पत्र-व्यवहार करना और दर्शकों के अच्छे-बुरे अभिप्राय चित्रकारों तक पहुँचाना भी खोर्शेद का काम था।

केकू ने गैलरी को उड़ने के लिये पंख दिये। खोर्शेद ने उसकी जड़ें मज़बूत की।

केकू के कानों तक खबर पहुँची कि ईरान की मल्लिका शाहबानू बंबई आ रही हैं। केकू चाहते थे कि वे आकर चित्रकारों से मिलें और कुछ प्रदर्शनियाँ देखें। मल्लिका-ए-ईरान के पास वक़्त की कमी थी। केकू ने राज्यपाल से अनुमति लेकर चुनिंदा चित्रों की राजभवन में ही नुमाईश की।

मल्लिका ने न सिर्फ़ चित्र देखे, बल्कि उनमें से एक चित्र ख़रीदा भी।



केकू का दिल बहुत बड़ा था, कभी-कभार उनकी जेब से भी बड़ा।

केकू : बेचारे का एक भी चित्र नहीं बिका अब तक।
खोर्शेद : तो चलो हम एक चित्र खरीद लेते हैं।
केकू : लेकिन... मैंने तो उसे कहा कि हम सभी के सभी खरीद लेंगे।
खोर्शेद : जनाब, पैसे कहाँ से आयेंगे?
केकू : हमारे चित्र संग्रह में से एक चित्र बेचकर।
खोर्शेद : ऐसा ही चलता रहा तो हमारे पास उम्दा चित्र ही नहीं बचेंगे, सिर्फ़ तुम्हारी उदारदिली के नतीजे दीवारों पर टँगे मिलेंगे!

केकू और खोर्शेद ने आगे जाकर गैलरी केमोल्ड की कलकत्ता और दिल्ली में शाखाएँ खोलीं।

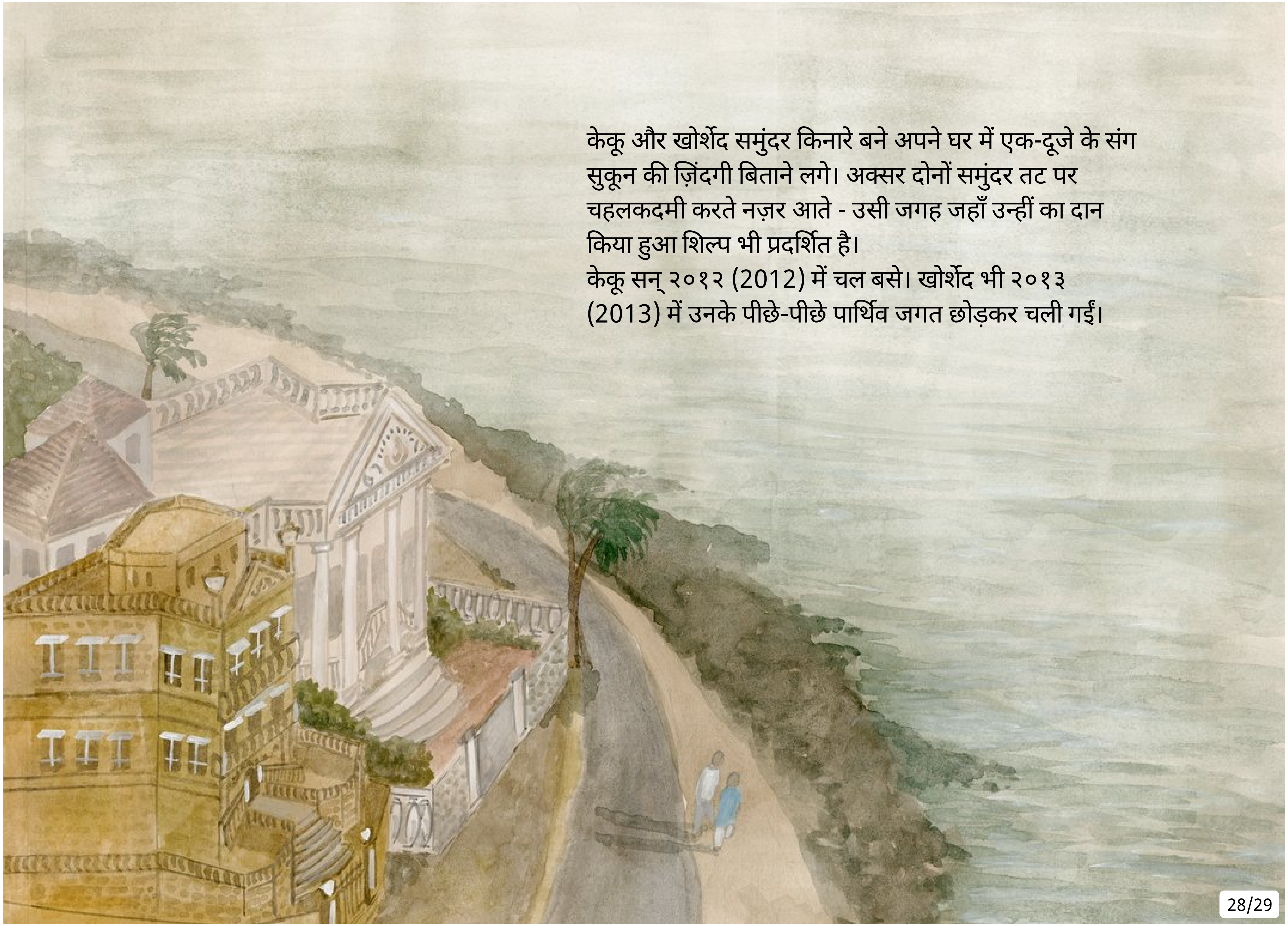




सन् १९९२ (1992) में बंबई में साम्प्रदायिक दंगे हुए। केकू क्षुब्ध हो उठे। पीड़ित लोगों का जीवन फिर से पटरी पर लाने के लिए उन्होंने बहुत मदद की। सभाओं में अमन का संदेशा फैलाने के लिए वे शहर भर घूमते।

अब तक उनकी बेटी शिरीन गांधी ने गैलरी का कारोबार सम्हाल लिया था। कला के क्षेत्र में नये बदलाव आ रहे थे। अभिनित कला, संस्थापन कला, वीडियो कला जैसे नये रूपों का बोलबाला था।

अब तो गैलरी भी नयी जगह पर तब्दील हो रही थी।
ज़िंदगी के अगले मोड़ पर कदम बढ़ाने का वक़्त आ गया था।



केकू और खोर्शेद समुंदर किनारे बने अपने घर में एक-दूजे के संग सुकून की ज़िंदगी बिताने लगे। अक्सर दोनों समुंदर तट पर चहलकदमी करते नज़र आते - उसी जगह जहाँ उन्हीं का दान किया हुआ शिल्प भी प्रदर्शित है।
केकू सन् २०१२ (2012) में चल बसे। खोर्शेद भी २०१३ (2013) में उनके पीछे-पीछे पार्थिव जगत छोड़कर चली गईं।



चौखटों से उन्होंने शुरुआत की।
चौखटों में भरे उन्होंने चित्र।
चित्र वे ले गये गैलरी में।
गैलरी बनी चित्रकारों की चौखट।
और उन दोनों ने अपने जीवनकाल में भारतीय
आधुनिक चित्रकला को विश्व-प्रसिद्ध होते हुए देखा।

Story Attribution:

This story: प्रिन्सेस स्ट्रीट की आर्ट गैलरी is translated by Sandhya Gandhi-Vakil . The © for this translation lies with Pratham Books, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: 'The Art Gallery on Princess Street', by Jerry Pinto . © Pratham Books , 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Other Credits:

'Princess Street Kee Art Gallery' has been originally published by Pratham Books. www.prathambooks.org. The development of this book has been supported by Parag, an initiative of Tata Trusts, and Edelgive Foundation. Guest Editor: Shabnam Minwalla.

Images Attributions:

Cover page: A wall with framed pictures, by Kripa B © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: A woman holding a cat, by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: A room with furniture, by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: A sofa and a lampshade, by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: A pig on the couch, by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: A store front, by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: A woman on the phone and a cat, by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: A photo frame and a desk, by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: A mansion, by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: Shadows, by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Images Attributions:

Page 11: Three people talking, by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 12: A window, by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 13: People running, by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: Pictures of people, by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: A man working, by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: Two people painting, by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 17: People standing around, by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 18: A woman, by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 19: two paintings , by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 20: Paintings, by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 21: A reflection, by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 22: A man sitting and drawing, by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Images Attributions:

Page 23: A collage and a chair, by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 24: A gallery, by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 25: An artist at work, by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 26: Two people talking, by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 27: Window, by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 28: Houses by the sea, by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 29: Two people standing, by Kripa B, Sudhir Patwardhan, Gieve Patel © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

प्रिन्सेस स्ट्रीट की आर्ट गैलरी

(Hindi)

केकू और खोर्शेद गांधी ने भारतीय आधुनिक चित्रकला को एक ऐसी जगह दी कि दुनिया भर में उसे मान्यता मिली। उनकी केमोल्ड आर्ट गैलरी चित्रकारों के लिये दूसरा ठिकाना बन गई।

This is a Level 4 book for children who can read fluently and with confidence.